*Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat*
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **24.11.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

# दुनिया के विभिन्न देशों से सम्बंधित जमाअत के दोस्तों के सपनों तथा कश्फ़ (दिव्य-दृष्टि) के द्वारा अहमदियत की क़बूलियत के ईमान वर्धक वृत्तांत पर आधारित हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़ुत्बः

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से बताया था कि आप अलै. ने फ़रमाया है कि यदि इन्सान पक्षपात से बचकर तथा हर प्रकार की हठ से विशुद्ध होकर अल्लाह तआला से दुआ करे, व्याकुल होकर अल्लाह तआला से नमाज़ों में दुआ मांगे तो चालीस दिन नहीं बीतेंगे कि अल्लाह तआला उसपर हक़ खोलेगा। किन्तु साफ़ दिल होना, हर प्रकार के पक्षपात से विशुद्ध होना यह अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा, आपने यह भी फ़रमाया कि जो लोग दिलों में द्वेष रखें, क्रोध रखें अथवा नेक और पाक सोचें न रखें, वे सदैव यही कहेंगे कि हमें अल्लाह तआला ने सपने में मार्ग दर्शन नहीं दिया अथवा आपके विरुद्ध बताया। अतः जो पाक दिल होकर ऐसा करते हैं उन लोगों को अल्लाह तआला की ओर से मार्ग दर्शन मिलता है। बहुत से लोगों को अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी आप अलै. के जीवन में सपनों के द्वारा मार्ग दर्शन किया। अतः एक मजलिस में चर्चा हुई कि लाहौर से एक व्यक्ति का पत्र आया है कि उसे सपने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में बतलाया गया कि आप सच्चे हैं। उस व्यक्ति की श्रद्धा एक भिक्षुक के साथ थी जो कि दाता गंज के मक़बरे के निकट रहा करता था। उस व्यक्ति ने उस फ़क़ीर से पूछा तो उसने कहा कि मिर्ज़ा साहब की इतने समय तक प्रगति होना उनकी सच्चाई का प्रमाण है। फिर एक अन्य मस्त फ़क़ीर वहाँ बैठा हुआ था उसने कहा बाबा! हमें भी पूछ लेने दो। दूसरे दिन उसने बताया कि ख़ुदा ने कहा है कि मिर्ज़ा मौला है तो उसपर पहले फ़क़ीर ने कहा कि मौला नहीं मौलाना कहा होगा कि वह तेरा और मेरा हम सबका मौला है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह सुनकर फ़रमाया कि आजकल सपने और रूया अधिक होते हैं, ऐसा लगता है कि अल्लाह तआला चाहता है कि लोगों को सपने के द्वारा सूचना दे, ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते हर ओर फिरते हैं, वे दिलों में डालते फिरते हैं कि मान लो, मान लो, फिर एक व्यक्ति का हाल बयान किया जिसने हुज़ूर के रद्द में किताब लिखने का निश्चय किया तो सपने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया कि तू तो रद्द लिखता है और वास्तव में मिर्ज़ा साहब सच्चे हैं। तो अल्लाह तआला नेक प्रकृति के लोगों को अनुचित कार्य से बचाने के लिए भी मार्ग दर्शन फ़रमा देता है। यह क्रम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने से आरम्भ हुआ था आज भी जारी है, पवित्र प्रकृति के लोगों की अल्लाह तआला रहनुमाई भी फ़रमाता है।

माली अफ्रीक़ा के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि मुस्तुफ़ा दियालु साहब ने एक दिन सपना देखा कि वे जन्नत में एक बड़े ही सुन्दर घर में हैं। घर के एक ओर पानी बह रहा है जिसमें एक सफ़ेद रंग के बुज़ुर्ग का चित्र है जिन्होंने पगड़ी पहनी हुई है। वे कहते हैं कि सपने के कुछ समय पश्चात वे अपने एक दोस्त के पास गए तो उनके घर उसी बुज़ुर्ग का चित्र देखा। उन्होंने अपने दोस्त से चित्र वाले बुज़ुर्ग के विषय में पूछा तो इस पर उन्हें बताया गया कि ये इमाम मेहदी हैं। अतः श्रीमान जी ने अपना सपना सुनाया तथा अहमदियत के विषय में और अधिक जानकारी चाही। इस पर अहमदी दोस्त ने कहा कि आज हमारा मासिक इजलास है आप मेरे साथ चलें, वहाँ मुबल्लिग़ से आप हर प्रकार के प्रश्न कर सकते हैं। इस प्रकार वे इजलास में शामिल हुए और इजलास के बाद अहमदी होने की घोषणा की।

इसी प्रकार यमन की एक महिला जमीला साहिबा बयान करती हैं कि जमाअत अहमदिया के परिचय से बहुत पहले मैं सऊदी

अरब में थी जहाँ मेरा झुकाव सूफ़ी इज़्म की ओर हो गया और हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी के लेख मुझे बड़े पसन्द आए। उनके बयान किए हुए एकांत के तरीक़े के अनुसार रह कर मुझे पर्याप्त शांति मिलती तथा रूहानियत का अनुभव होता। इन्हीं एकांत अवस्था के दिनों में एक रात मैंने सपने में देखा कि एक चाँद जैसा बहुत बड़ा तारा ज़मीन पर नाज़िल हुआ तथा धरती पर चल फिर रहा है और फिर छत के रास्ते वह हमारे घर में भी दाख़िल हो जाता है। मैं भयभीत और आश्चर्य में थी कि मेरी आँख खुल गई। कुछ दिनों के पश्चात ही मैंने एक अन्य सपने में पाँच और तारे देखे जो पंक्ति बनाए हुए धरती पर चल रहे थे परन्तु वे पहले देखे गए तारों से आकार में छोटे थे। फिर जब एम टी ए के माध्यम से जमाअत के विषय में जानकारी प्राप्त हुई तो उसके विषय में जानने के लिए प्यास बढ़ती चली गई। एम टी ए देखने के बीच ही मेरे दिल में हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की मुहब्बत पैदा होकर बढ़ने लगी और मुझे इस बात का दृढ़ विश्वास हो गया कि आप ही इमामुज़्ज़मान हैं। इसी बीच मैंने प्रोग्राम अलहवारिल अलमुबाशिर में सुना कि हज़रत इमाम मेहदी की सच्चाई के विषय में जाँच करने वालों को इस्तिख़ारा करके मार्ग दर्शन की दुआ करनी चाहिए। अतः बताए गए तरीक़े के अनुसार, कहती हैं मैंने दो रकअत नमाज़ अदा की और सो गई। उसी रात मैंने सपने में देखा कि मैं मक्कतुल मुकर्रमा में लोगों की भीड़ में हूँ, लोग अपने पाँव के पन्जों पर खड़े होकर गर्दनें लम्बी करते हुए एक व्यक्ति देखने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे में कोई ऊँची आवाज़ से कहता है कि ऐ लोगो! तुम्हारा इमाम आ गया है, ऐ लोगो! इमाम मेहदी आ गया है। मैं भी उसी दिशा में देखना शुरु कर देती हूँ। हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम एक ऊँचे स्थान पर सबके सामने प्रकट हो जाते हैं। उनका चेहरा बदर मुनीर की भांति चमक रहा था, आँखों में दर्द की स्थिति थी। जब मैंने ध्यान पूर्वक उनके चेहरे मुबारक की ओर देखा तो वह बिलकुल उसी इमाम मेहदी और मसीह मौऊद का चेहरा था जिसे मैंने एम टी ए पर देखा था। यह देखते ही मेरी आँखों से आँसू छलक पड़े और मैं ज़ोर ज़ोर से रोना शुरु कर देती हूँ। जब मैं यह सपना देख रही थी उस समय मेरे पति जाग रहे थे। उन्होंने मुझे जगाकर कहा कि तुम बड़े दर्द के साथ रो रही थी। मैं जागी तो मेरी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। कहती हैं इस सपने के बाद मुझे विश्वास हो गया कि सत्य यही है कि यह व्यक्ति इमामुज़्ज़मान है। इस प्रकार मैंने इस इमाम की बैअत करने का निर्णय किया। फ़रमाया- यमन की हैं यह, सब जानते हैं कि यमन के हालात आजकल बड़े ख़राब हैं तथा समुद्री और हवाई मार्ग भी, पड़ौसी देशों, सऊदी अरब ने, इनके बन्द कर दिए हैं। हर प्रकार की सहायता जाने पर वहाँ रोकें डाली जा रही हैं। निर्दोष बच्चे महिलाएँ बूढ़े खाद्य सामग्री न होने कारण तथा उपचार की सुविधाएँ न होने के कारण मर रहे हैं। मुसलमान मुसलमान की हत्या कर रहा है और कारण यही है कि आने वाले इमाम को नहीं मानते। इनके लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला इनके भी हालात फेरे तथा स्वतंत्रता और सरलता के सांस लेने वाले हों ये। अल्लाह तआला इन पर रहम करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कुछ नेक प्रकृति वाले दिल से अहमदियत को सच्चा समझने के बावजूद कुछ परिस्थितियों के कारण बैअत नहीं करते। अल्लाह तआला किस प्रकार उनको बैअत करके यथावत जमाअत में शामिल होने की ओर ध्यान दिलाता है। इसके बारे में माली से ही काई रीजन के मुअल्लिम साहब लिखते हैं कि एक दोस्त अब्दुल हयी जाबी साहब के एक निकट के एक दोस्त का रमज़ानुल मुबारक के अन्तिम दशक में सहसा निधन हो गया। उन्होंने एक दिन सपने में देखा कि वे अपने उसी स्वर्गवासी दोस्त के साथ बस में यात्रा कर रहे हैं और उनके दोस्त उनसे कहते हैं कि तुम जिस जमाअत में दाख़िल हो रहे हो, वह सच्ची जमाअत है, मैं भी उसी जमाअत में शामिल हो रहा हूँ। अब्दुल हयी जाबी साहब नियमित रूप से हमारा रेडियो सुनते थे तथा दिल से अहमदी थे, परन्तु अभी तक बैअत नहीं की थी। किन्तु इस सपने के पश्चात उन्होंने फ़ोन करके कहा कि मैं काई नगर से बड़ी दूर रहता हूँ, आपका रेडियो सुनता हूँ, तबलीग़ सुनता हूँ, मैंने इस प्रकार का सपना देखा है मेरी बैअत क़बूल कर लें और आज से मैं अहमदी हूँ।

फिर मिस्र के एक दोस्त महमूद ग़रीब साहब कहते हैं- नौ वर्ष की आयु से मैं सपने में एक रोबदार आवाज़ सुनता था जिसकी प्रति ध्वनि मेरे कानों में गूंजती रहती थी। मैं उसे न समझ सकता था किन्तु उसको सुनकर मैं डर जाता था। फिर जब 2010 में मेरा एम टी ए अल-अर्बीय्यः से परिचय हुआ तो उस पर शरीफ़ ओदे साहब और असद मूसा ओदे साहब की आवाज़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण सुने तो तुरन्त समझ गया कि यही वह आवाज़ थी जो मैं नौ वर्ष की आयु से अपने सपनों में सुन रहा था। इस प्रकार इसके पश्चात एम टी ए और अधिक ध्यान पूर्वक देखना शुरु कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम तथा आपके क़सीदे मेरे दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ जाते। मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर चेहरे का ध्यान करता तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र मेरे सामने आ जाता। एक दिन मैं एम टी ए देख रहा था और साथी ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र भी आ रहा था, मैंने उसे सम्बोधित करके कहा कि मैं तुझे ख़ुदा की क़सम देकर कहता हूँ कि तुम मुझे स्वयं बताओ कि क्या तुम अपने दावे में सच्चे हो या नहीं? इसके बाद कहते हैं, मैं काम पर चला गया, शाम को जब वापस आया तथा तुरन्त

टी वी खोलकर एम टी ए लगाया तो उस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह उद्धरण पढ़ा जा रहा था कि يَاقَوْمِ اِنِّي مِنَ اللهِ اِنِّي مِنَ اللهِ اِنِّي مِنَ اللهِ وَاَشْهِدُرَبِّي اِنِّي مِنَ اللهِ अर्थात- ऐ मेरी क़ौम, मैं ख़ुदा की ओर से हूँ, मैं ख़ुदा की तरफ़ से हूँ और मैं अपने रब्ब को साक्षी बनाकर कहता हूँ कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से हूँ। यह सुनते ही, कहते हैं कि मैं अपने घुटनों के बल गिर गया और लीन होकर टी वी पर ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम के चित्र को चूमते हुए अलैकस्सलामु अलैकस्सलाम कहना शुरु कर दिया। यूँ एक क्षण में अहमदियत ही मेरा सब कुछ हो गई और फिर मैंने बैअत कर ली।

उर्दुन के एक दोस्त जमील ज़रान साहब कहते हैं कि एक रात मैंने सपने में देखा कि रास्ते पर अकेला खड़ा हूँ जो सीधा और पक्का है। इतने में एक माडर्न मर्सडीज़ कार आती है उसमें ड्राईवर के साथ वाली सीट पर एक व्यक्ति बैठा है जो मुझे कार चलाने का निर्देश देता है। मैं ड्राईवर सीट पर बैठ गया मेरे दिल में डाला गया कि मैं हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के साथ बैठा हूँ, मुझे भय सा लगने लगा, गाड़ी चली तो रास्ते में सहसा बहुत से काले चेहरे वाले प्रकट हुए और रास्ते के दोनों ओर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए और उनके पास थोड़े से हथियार भी थे। फिर उन्होंने हम पर फ़ायरिंग कर दी किन्तु हमें कोई गोली नहीं लगी तथा सुरक्षित अपनी मंज़िल पर पहुंच गए। कहते हैं कि सपने में ही मैं गाड़ी खड़ी करता हूँ तो हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम मुझे फ़रमाते हैं कि नीचे उतर आओ और गाड़ी की डिग्गी खोलो। मैं नीचे उतर कर खोलता हूँ तो वहाँ लकड़ी का एक सुन्दर सा संदूक़ होता है जिसमें एक पाँच साल का बच्चा होता है जो बड़ा सुन्दर है, वह बच्चा मुझे देखने लगता है। जब मैं जागा तो सपने से बड़ा प्रसन्न था और दिल में कहा कि निःसन्देह यह ख़ुदा तआला की ओर से कोई पैग़ाम है। मुझे इसका यह स्वप्नफल लगा कि नई गाड़ी का अभिप्रायः जीवन की नई यात्रा है, काले चेहरे वाले जो हम पर फ़ायरिंग करते हैं इसका अभिप्रायः इस नई यात्रा से दुश्मनी करने वाले हैं जिनका कोई प्रभाव नहीं होगा और सुन्दर बॉक्स में भेद सुरक्षित रखे जाते हैं और पाँच वर्ष के बच्चे का अभिप्रायः कुछ शुभ सूचनाएँ हैं जो पाँच वर्ष की अवधि में पूरी होंगी। कहते हैं कि आश्चर्य की बात यह है कि अहमदिया जमाअत से परिचय के बाद मेरे जीवन की नई यात्रा आरम्भ हो गई तथा पाँचवीं ख़िलाफ़त के पवित्र समय में मुझे जमाअत में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कहते हैं मैं अपने गाँव में अकेला अहमदी था तथा जैसे ही मैंने इमाम मेहदी के प्रकट होने की घोषणा की, अपने पराए सब मेरे शत्रु हो गए। मस्जिदों से मेरे कुफ्र के फ़त्वे जारी होने लगे। फिर मैंने ख़ुदा तआला से दुआ मांगी कि इस यात्रा को पूरा करने के लिए मुझे साथी प्रदान कर दे तो ख़ुदा तआला ने मुझे ऐसे नेक और अच्छे साथी प्रदान फ़रमा दिए जिन्हें मैं जानता भी न था और वही मेरे वास्तविक सगे सम्बंधी ठहरे।

फिर एक दोस्त हैं मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब जो सीरिया के हैं, आजकल कैनेडा में रहते हैं। कहते हैं मैं एक सेल्ज़ मैन की नौकरी करता था। मेरे ग्राहकों में से एक व्यक्ति के बेटे से मेरा परिचय हुआ, यह नौजवान अहमदी था। इसके साथ सम्पर्क बढ़ा तो उसने मुझे अहमदिया जमाअत के विषय में बताया। उसने मुझे इस्लामी उसूल की फ़लास्फ़ी का अरबी अनुवाद दिया। मैं इस किताब को पढ़कर बड़ा प्रभावित हुआ तथा उसमें पाई जाने वाली बुद्धि संगत बातें बड़ी पसन्द आईं। फिर लगभग एक साल तक मैं जमाअत के विभिन्न पुस्तकें पढ़ता रहा तथा एम टी ए अलअर्बीय्यः भी देखना शुरु कर दिया। एक साल के अध्ययन तथा एम टी ए देखने तथा जमाअत की आस्थाओं की तुलना करने के बाद मेरे दिल में अहमदिया जमाअत में शामिल होने की इच्छा जन्म लेने लगी। मैंने इस्तिख़ारा करना शुरु किया, कुछ दिनों के बाद आने वाली एक रात मेरे लिए लैलातुल क़द्र साबित हुई जिसमें मैंने एक अत्यंत शुभ सपना देखा। मैंने अपने एक नेक और सज्जन रिश्तेदार को सपने में देखा, उसने मुझे एक पत्र देते हुए कहा कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से है। मैंने बड़े चाव से उसे तुरन्त खोला तो उसमें लिखा था, अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, मैं जागा तो बड़ा प्रसन्न था तथा मेरी ज़बान पर यह आयत करीमा जारी थी اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ कि इनमें सलामती के साथ और बिना भय के दाख़िल हो जाओ। कहते हैं- जमाअत में दाख़िल होने के लिए एक स्पष्ट सन्देश था, मुझे विश्वास था कि यह मेरे इस्तिख़ारे का जवाब है इस कारण से फिर मैंने बैअत कर ली।

फिर एक महिला हैं सीरिया की, वे कहती हैं कि अहमदियत के विषय में जानने से पहले मैं और मेरी बहिन एक जमाअत को सच्चा समझकर उसमें शामिल हुए परन्तु बाद में पता चला कि इस जमाअत ने तो शरीअत के नाम पर अपनी ही शरीअत बनाई हुई है। इसके बाद मैंने ख़ुदा तआला से रो रो कर दुआएँ कीं तथा निवेदन किया कि ख़ुदाया मुझे बता कि आज तेरा सही दीन कहाँ है तथा आज किस जमाअत को तेरा समर्थन प्राप्त है। ऐसी अवस्था में मैंने देखा कि एक व्यक्ति मेरे साथ आकर खड़ा हो गया है तथा उस अवस्था ही में मुझे यह अनुभव हुआ कि वह मेरे साथ सहानुभूति के लिए आया है। मैंने उसे देखकर दिल में कहा कि यह व्यक्ति कौन है? परन्तु मुझे इसका कोई उत्तर नहीं मिला। अगले दिन फिर मैं बहुत रोई यहाँ तक कि मेरी हिचकी बन्ध गई और मैंने दोबारा उस व्यक्ति को अपने

साथ देखा। तीसरी बार फिर वैसा ही हुआ तो मैंने उच्च स्वर में ख़ुदा तआला के समक्ष यह निवेदन किया कि ख़ुदाया मुझे बता दे कि यह सहानुभूति करने वाला व्यक्ति कौन है और बार बार मुझे क्यूँ दिखाई देता है। इस सवाल का जवाब, कहती हैं कि मुझे कुछ समय पश्चात मिला। मैंने एक विचित्र सपना देखा जिसने मेरी काया पलट दी। मैंने देखा कि मैं एक बड़े मैदान में हूँ ऐसे में कुछ लोगों को एक कार में आते देखा जिसकी छत पर सैटलाईट डिश लगी होती है। उनकी कार उस मैदान के बीच में पहुंच कर रुक जाती है तथा उसमें से कुछ लोग सामान निकाल कर ज़मीन पर रखते जाते हैं। उनमें से एक व्यक्ति ने अरबी लिबास पहना हुआ है तथा उसका चेहरा रौशन है। सहसा यह व्यक्ति मैदान के बीच से मेरे सामने आकर खड़ा होता है और मुझसे कहता है कि बहन तुम यहाँ पर क्या कर रही हो? मैं जवाब देने के बजाए उससे पूछती हूँ कि आप लोग यहाँ क्या कर रहे हैं। वह कहता है हम नया टी वी चैनल खोलने लगे हैं, क्या तुम देखोगी। मैं कहती हूँ, क्यूँ नहीं मैं अवश्य देखूँगी। इस बात चीत के बाद कहती हैं कि मेरी आँख खुल गई। अगले दिन मैं टी वी ले आई तथा थोड़े समय में ही सब कुछ सैट कर लिया। बारी बारी भिन्न भिन्न चैनलों के देखते समय मैंने अनुभव किया कि एक चैनल सबसे अलग है। यही कारण था कि शेष अन्य चैनलों को छोड़कर कुछ देर के लिए उसे देखने लग गई। यह चैनल एम टी ए था तथा उस समय उस पर प्रोग्राम अलहवार का चल रहा था। उस प्रोग्राम को देखते समय बार बार मेरी नज़र प्रोग्राम के संचालक की ओर उठती थी तथा मुझे ध्यान आता कि मैंने उसे कहीं देखा है। सहसा मुझे याद आया कि यह तो वही व्यक्ति है जिसे सपने में मैंने बड़े मैदान में सैटलाईट चैनल खोलते देखा था। एक दिन मैं प्रति दिन की भांति उनका प्रोग्राम देख रही थी कि उसमें इमाम मेहदी और मसीह मौऊद के शब्द सुनकर तुरन्त आकर्षित हो गई। इतने में एक चित्र टी वी के स्क्रीन पर प्रकट हुआ और उसके नीचे इमाम मेहदी और मसीह मौऊद के शब्द अंकित थे, मेरी जिज्ञासा और बढ़ी, इतने में इमाम मेहदी के कलाम से कुछ अंश पेश किए गए। पहले उद्धरण की पहली पंक्ति ही मेरी काया पलटने के लिए पर्याप्त साबित हुई जो यह थी- وَوَاللّٰهِ اِنِّیْ مِنَ اللّٰهِ اَتَیْتُ وَمَفْتَرَیْتُ وَقَدْخَابَ مَنِ افْتَرٰی

अर्थात- ख़ुदा की क़सम मैं ख़ुदा की ओर से आया हूँ न कि मैंने कोई झूठ घड़ा है, निःसन्देह झूठ घड़ने वाला असफल रहता है। ये शब्द सुनते ही मैंने अनियन्त्रित होकर कहा कि यह किसी सच्चे व्यक्ति का कलाम है, निःसन्देह यह व्यक्ति अपने दावे में सच्चा है तथा यही मसीह मौऊद और इमाम मेहदी है। उद्धरण के बीच ही जब दोबारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र दिखाया गया तो अबकी बार उसको देखकर मैं वहीं ठिठक कर रह गई, क्यूँकि यह वही व्यक्ति था जिसे इससे पहले मैं कश्फ़ी अवस्था में देख चुकी थी। जब मैंने ख़ुदा तआला से रो रो कर दुआएँ करते हुए निवेदन किया कि ख़ुदाया आज तेरा सही दीन कहाँ है और आज किस जमाअत को तेरा समर्थन प्राप्त है, उस समय यही व्यक्ति मेरे साथ सहानुभूति करने के लिए आया था और उसे देखकर मैंने दिल में कहा था कि न जाने यह व्यक्ति कौन है। अब टी वी पर वही व्यक्ति देखकर मुझे अपना कश्फ़ और उसका फल भी समझ में आ गया। ख़ुदा तआला ने उस समय भी मुझे बताया था कि यही व्यक्ति है जिसकी जमाअत को ख़ुदाई समर्थन प्राप्त है और यही ख़ुदा तआला के सच्चे दीन की प्रतिनिधि जमाअत है। कहती हैं मैंने रोते हुए उस चित्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज तू ही इस्लाम का बचाव कर रहा है, तू इस्लाम के विरोध को तोड़ रहा है, तू सच्चा मसीह व मेहदी है, मैं तेरी तसदीक़ करती हूँ तेरी बैअत करती हूँ। जबकि मुझे उस समय जानकारी भी नहीं थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करनी अनिवार्य है। मैंने अपने निकट के लोगों को इस चैनल और जमाअत के विषय में बताया तो अधिकतर लोगों ने मेरी बात को गम्भीरता से नहीं लिया यद्यपि मेरी बहन और ख़ाला ने कई दिनों तक एम टी ए देखने के बाद बैअत करने का निश्चय कर लिया तथा फिर बाद में मेरी वालिदह, भाई और अन्य दो बहनों ने भी बैअत कर ली।

इनके अतिरिक्त हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने रूया, कशूफ़ (दिव्य-चक्षु) तथा सपनों के आधार पर अहमदियत क़बूल करने के कुछ ईमान वर्धक वृत्तांत बयान फ़रमाए तथा अन्त में फ़रमाया- ये कुछ घटनाएँ जो मैंने बयान की हैं, इस प्रकार की बहुत सारी घटनाएँ हैं। अल्लाह तआला इन नए आने वालों के ईमान और विश्वास में उन्नति भी अता फ़रमाए, श्रद्धा और निष्ठा में बढ़ाए और हम जो पहले अहमदी हैं, हममें से भी प्रत्येक को निष्ठा और ईमान में बढ़ाए।



**TOLL FREE NO: 180030102131**